

## पंचम अध्याय

### **परिणाम - निष्कर्ष एवं सुझाव:-**

प्रस्तुत अध्याय में बी.एड. अभ्यर्थी का ग्रामीण और शहरी क्षेत्र के मध्य सहसंबंध का अध्ययन के संदर्भ में प्रयुक्त शोध उपकरणों (कुल अभ्यर्थी, ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के अभ्यर्थियों की संख्या) से प्राप्त कुल आँकड़ों में सांख्यिकी विश्लेषण, व्याख्या एवं निष्कर्षों से प्राप्त विवरणों को क्रमबद्ध एवं संगठित करके निम्न रूप में प्रस्तुत किया गया है:-

1. प्रस्तुत अध्ययन के परिणाम
2. प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्ष
3. प्रस्तुत अध्ययन के शोध निष्कर्षों का पूर्ववर्ती शोध अध्ययनों के निष्कर्षों के संदर्भ में अध्ययन
4. प्रस्तुत अध्ययन के शैक्षिक निहितार्थ
5. भावी शोध अध्ययन हेतु सुझाव
6. प्रस्तुत अध्ययन की सीमाएँ

**प्रस्तुत अध्ययन के परिणाम:-** प्रस्तुत शोध अध्ययन के उद्देश्यों के संदर्भ में शोध आँकड़ों के सांख्यिकी विश्लेषण एवं विस्तृत व्याख्या के पश्चात् कई नवीन तथ्य प्रकाश में आये इन नवीन तथ्यों पर आधारित प्राप्त परिणामों को प्रस्तुत शोध अध्ययन के उद्देश्यों के अनुरूप शोधकर्ता द्वारा प्रस्तुत किया गया।

**बी.एड. विद्यार्थियों का स्नातक एवं परास्नातक के संदर्भ में प्राप्त परिणामों का विवरण:-**

1. शैक्षिक योग्यता के आधार पर (स्नातक/परास्नातक/विद्यार्थियों का मध्यमान क्रमशः 91.2 और 95.64 पाया गया है।

2. शैक्षिक योग्यता के आधार पर (स्नातक/परास्नातक) विद्यायाथियों का मानक विचलन क्रमश 7.81 और 16.60 पाया गया है।

3. शैक्षिक योग्यता के आधार पर  $t$  का मान 85 है। अतः  $t$  के मान में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया है।

#### लैंगिक आधार पर प्राप्त परिणामों का विवरण:-

1. लैंगिक आधार पर मध्यमान (स्त्री, पुरुष) 86.50 तथा 83.11 पाया गया है।
2. लैंगिक आधार पर मानक विचलन (स्त्री, पुरुष) 70.61 तथा 10.63 पाया गया है।
3. लैंगिक आधार पर  $t$  का मान 1.62 पाया गया है, जो सम्भत: 0.5 के संदर्भ में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया है।

#### बी.एड. विद्यायाथियों का प्रस्थिति के आधार पर प्राप्त परिणामों का विवरण:-

1. प्रस्थिति के आधार पर (ग्रामीण/शहरी) विद्यायाथियों का मध्यमान क्रमश: 93.05 तथा 76.46 पाया गया है।
2. प्रस्थिति के आधार पर (ग्रामीण/शहरी) विद्यायाथियों का मानक विचलन क्रमश: 7.48 एवं 6.29 पाया गया है।
3. प्रस्थिति के आधार पर  $t$  टेस्ट का मान 11.8 पाया गया है, जिसमें 0.5 के स्तर पर सार्थक अंतर पाया गया है।

#### प्रस्तुत अध्ययन के शोध निष्कर्षों का पूर्ववर्ती शोध अध्ययनों के निष्कर्षों के संदर्भ में अध्ययन:-

1. बी.एड. अभ्याथियों के मूल्यों का व्यक्तिगत चरों के संदर्भ में लैंगिक (पुरुष/स्त्री) के आधार पर सार्थक अंतर प्राप्त हुआ है।
2. शैक्षिक योग्यता (स्नातक/परास्नातक) के आधार पर सार्थक अंतर प्राप्त नहीं हुआ जबकि क्रांति(2011) में विपरीत निष्कर्ष पाया गया।

3. प्रस्थिति (ग्रामीण/शहरी) के आधार पर सार्थक अंतर प्राप्त नहीं हुआ इस प्रकार का निष्कर्ष चौधरी (2009 और गोबिल, 2015) ने विपरीत निष्कर्ष निकाला।

प्रस्तुत अध्ययन के परिणामों के विवरण के आधार पर निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए :-

1. एक बी.एड. अभ्यर्थी समावेशी शिक्षा के संदर्भ में क्या सोचता है, और यदि वह शिक्षक मूल्ययुक्त बनता है, तो वह अपने शैक्षिक एवं सहशैक्षिक कार्य उत्तम रीति से संपादित करने का प्रयास है, यदि विद्यालय का वातावरण शिक्षक के अनुकूल न हो, तो ऐसी स्थिति में वह अपने शैक्षिक कार्यों को पूर्णरूप से संपादित नहीं कर पाता है, जिससे शिक्षक की कार्य सन्तुष्टि का स्तर अपेक्षाकृत कम हो जाता है। अतः विद्यालय का वातावरण उत्तम श्रेणी का होना चाहिये।

2. यदि शिक्षक मूल्ययुक्त है, तो वह अपने शैक्षिक एवं सहशैक्षिक कार्यों एवं संस्थागत लक्ष्यों के कार्यरूप में निष्पादन के प्रति पूर्णरूप से कर्तव्य निर्वहन एवं पालन करता है। अतः शिक्षकों ने मूल्य ग्रहण एवं उसको कर्तव्य निर्वहन का पालन करता है। अतः शिक्षकों में मूल्य ग्रहण एवं उसको कार्यरूप देने का वातावरण उनके प्रशिक्षण एवं शिक्षण दोनों स्थितियों में विद्यमान होना चाहिए।  
में मूल्य ग्रहण एवं उसको कर्तव्य निर्वहन का पालन करता है। अतः शिक्षकों में मूल्य ग्रहण एवं उसको कार्यरूप देने का वातावरण होना चाहिये।

3. एक शिक्षक को समावेशी शिक्षा का अर्थ जान होना चाहिए तथा सभी विद्यार्थियों को हर क्षेत्र में समान अवसर प्राप्त होना चाहिए तथा विद्यार्थियों को अध्ययन के साथ-साथ अन्य क्षेत्र में भी भाग लेना चाहिए।



## प्रस्तुत अध्ययन के शैक्षिक निहितार्थ :-

1. बी.एड. अभ्यर्थियों को समावेशी शिक्षा में विभिन्न प्रकार के एक्ट और पॉलिसी का अध्ययन कराया जाता है।
2. विकास हेतु कार्यरत शिक्षक एवं भावी शिक्षकों को व्यावहारिक सैद्धांतिक प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है।
3. शिक्षक राष्ट्र निर्माता होता है, उसमें विभिन्न प्रकार के मूल्यों का समाहित होना समाज के कल्याण के लिए परमावश्यक है। अतः वर्तमान समय में शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं के पाठ्यक्रम में मूल्यों को महत्वपूर्ण स्थान प्रदान किया जाये तथा शिक्षक प्रशिक्षकों द्वारा भावी शिक्षकों में उत्तम मूल्य का विकास किया जायें।
4. विद्यालय में शिक्षक की जवाबदेही के निर्वहन हेतु व्यावहारिक शिक्षक आचार संहिता का निर्माण तथा उसका अनुपालन कराया जाए।
5. शिक्षकों के मूल्यों के स्तर उच्च बनाये रखने के लिए शैक्षिक प्रशासन को नवीन शैक्षिक योजनाएँ शैक्षिक योजनाएँ, शिक्षक उन्मुखीकरण के कार्यक्रम का क्रियान्वयन किया जायें।
6. वर्तमान समय में मूल्यों के क्षरण को रोकने नवीन मूल्यों के विकास तथा शाश्वत एवं सर्वभौमिक मूल्यों के संरक्षण के लिए विद्यार्थियों को मूल्य शिक्षा प्रदान किया जायें।
7. शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करना।

## भावी शोध अध्ययन हेतु सुझाव :-

1. प्रस्तुत शोध अध्ययन भोपाल जिले तक सीमित है, अतः भावी शोध अध्ययनों को मण्डल स्तर या बड़े भौगोलिक परिक्षेत्र पर विस्तारित किया जा सकता है।

2. प्रस्तुत शोध अध्ययन समावेशी शिक्षा में मध्यप्रदेश द्वारा संचालित भोपाल जिले के दो कॉलेज को लिया गया है। एक कोपल कॉलेज ऑफ़ इन्सटिट्यूट और दूसरा मिलेनियम ग्रुप ऑफ़ इन्स्टीट्यूट को लिया गया है, इसमें बी.एड. की अभ्यर्थियों को सम्मिलित किया गया है।

3. प्रस्तुत शोध में केवल बी.एड. अभ्यर्थियों को लिया गया है, इसके अतिरिक्त प्राथमिक स्तर के शिक्षक, उच्च प्राथमिक स्तर, माध्यमिक स्तर और विश्वविद्यालय स्तर के शिक्षकों को भावी शोध अध्ययन हेतु सम्मिलित किया जा सकता है।

4. प्रस्तुत शोध में विद्यार्थियों के मूल्य कार्य संतुष्टि एवं जवाबदेही को सम्मिलित किया गया है, इसके अतिरिक्त विद्यार्थियों के व्यक्तित्व से संबंधित कारकों के भावी शोध अध्ययन हेतु सम्मिलित किया जा सकता है।

#### **प्रस्तुत अध्ययन की सीमाएँ:-**

1. प्रस्तुत अध्ययन से प्राप्त परिणाम केवल वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि पर आधारित है।

2. प्रस्तुत अध्ययन से प्राप्त परिणाम शोध में सम्मिलित प्रयोज्यों द्वारा प्रदत्त प्रतिक्रिया पर आधारित है।

3. प्रस्तुत अध्ययन केवल मध्यप्रदेश के भोपाल जिले में समावेशी शिक्षा परिषद् से मान्यता प्राप्त बी.एड. कॉलेज के अभ्यर्थियों को सम्मिलित किया गया है।

# मापनी

क्र.	कथन	पूर्णतः सहमत	सहमत	अनिश्चित	असहमत	पूर्णतःसहमत
1.	विद्यालय में दिव्यांग विद्यार्थियों को विशेष आवश्यकता शौचालय, पुस्तकालय, खेल का मैदान को ध्यान में रखकर विद्यालयीन व्यवस्था में सुधार किया जाना चाहिए।					
2.	विद्यालय में सभी शैक्षणिक क्रियाकलापों पाठ्यक्रम में सम्मिलित जैसे सांस्कृतिक खेल-कूद अन्य में दिव्यांग विद्यार्थियों को सम्मिलित किया जाना चाहिए।					
3.	विद्यालय में दिव्यांग विद्यार्थियों से सम्बन्धित जीवनी उपलब्धियों से सम्बन्धित कार्यक्रमों का आयोजन किया जाना चाहिए।					
4.	विद्यालय में शिक्षक, अभीभावक गोष्ठी में दिव्यांग विद्यार्थियों से सम्बन्धित अभीभावकों के सुझाव पर ध्यान देना चाहिए।					
5.	विद्यालय में प्रशिक्षित शिक्षकों, प्रशासकों, अभिभावकों एवं समाज में प्रबुद्ध जनों के साथ मिलकर समावेशि शिक्षा क्रियानवयन से संबंधित चुनौतियों पर विचार-विमर्श करना।					
6.	विद्यालय के प्रशासकों, अभिभावकों को गैर-सरकारी संगठनों दान-दाताओं से दिव्यांग विद्यार्थियों की सहायता हेतु संयोग लेना।					
7.	दिव्यांग विद्यार्थी की आवश्यकता अनुसार सामान्य कक्षा व्यवस्था में परिवर्तन समय एवं संसाधनों की बरबादी है।					
8.	कक्षा शिक्षण के दौरान दिव्यांग बच्चों पर ध्यान देना उचित नहीं है।					
9.	सामान्य विद्यार्थियों की कक्षा में दिव्यांग बच्चों से समायोजित नहीं हो पाते।					
10.	दिव्यांग व सामान्य बच्चों को सम्मिलित रूप से एक ही कक्षा में प्रभावी ढंग से अध्यापन कार्य किया जा सकता है।					
11.	मुझे अपनी कक्षा में दिव्यांग विद्यार्थियों को उनकी आवश्यकता अनुसार पुस्तकें व अन्य आवश्यक					

	सामाग्री उपलब्ध कराये।					
12.	लॉक डाउन 2016 यह दिव्यांग विद्यार्थियों की सहायता के लिए बनाया गया है इसमें दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए भिन्न-भिन्न व्यावहारिक व उपयुक्त प्रावधान जो दिये है उससे परिचित है।					
13.	समावेशि शिक्षा का प्रभाव सामान्य विद्यार्थियों पर नकारात्मक पड़ता है।					
14.	कक्षा अध्यापन में प्रत्येक बच्चों के अध्यापन स्थल पर ध्यान देना कठिन है।					
15.	समावेशि कक्षा में दिव्यांग बच्चों को प्रभावी ढंग से पढ़ाया जा सकता है।					
16.	भारतीय संविधान में शिक्षा संबंधि अनुच्छेदों में वर्णित शिक्षा संबंधि प्रावधानों के प्रति में वचन बद्ध है।					
17.	समावेशि कक्षा में प्रत्येक दिव्यांग बच्चों की प्रगति की व्यक्तिगत जानकारी कठिन है।					
18.	कक्षा में दिव्यांग बच्चों द्वारा सही उत्तर न मिलने पर झुंझलाहट होती है।					
19.	कक्षा अध्यापन में प्रत्येक बच्चे के अध्यापक स्तर पर ध्यान देना कठिन है।					
20.	सामान्य विद्यालयों में सामान्य विद्यार्थियों के साथ-साथ विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों को शिक्षा देना व्यावहारिक कम सैधांतिक ज्यादा है।					